करने के बाद स्वीकार किया कि वास्तव में ही कौमुदी अशुद्ध है। नैयायिक धरणिधर ने चौदह वर्ष नव्य न्याय का अध्ययन किया था मगर जब उन्होंने मथुरा में दण्डी जी से शास्त्र-चर्चा की तो बोले कि मैने चौदह वर्ष व्यर्थ ही नष्ट किए इससे अच्छा तो यह था कि मैं आपसे ही पढ़ लेता।

एक बार एक चालाक पण्डित दण्डी जी के पास उन्हें पराजित करने के लिए आया। उसकी स्मरण-शक्ति बहुत तेज थी तथा दूसरे विद्वान् की कही हुई बात को तुरन्त स्मरण करके उसे ही दोहरा कर कहता था कि यह तो दास पहले से ही जानता था कोई नई बात तो कही नहीं। दण्डी जी उसकी चालाकी भांप गए और गणपाठ में आए अप्रचलित शब्दों से युक्त संस्कृत बोलनी आरंभ कर दी। वह चालाक पण्डित उन बातों को तुरन्त स्मरण नहीं कर सका और दण्डी जी से विनम्र होकर बोला-जिस कौशल से मैनें बड़े-बड़े पण्डितों को पराजित किया था, वह आपके समक्ष बेकार है। निःसन्देह आप विद्या के भण्डार हैं। एक बार कोई यूरोपीय संस्कृत विद्वान् मथुरा आए तथा उन्होंने क्लेक्टर के बंगले पर कुछ विद्वानों को आमंत्रित किया। दण्डी जी भी निमंत्रण मिलने पर इस गोष्ठी में सम्मिलित हुए। यूरोपीय विद्वान् ने सायण-भाष्य की चर्चा की और कुछ वेद-मंत्रों का उच्चारण किया। दण्डी जी अशुद्ध मंत्रोच्चारण को सहन न कर सके तथा तुरन्त बोले-ऐसा अशुद्ध उच्चारण करने वालों को वेदाध्ययन का अधिकार किसने दिया। पराधीनता के उन दिनों में इतना साहसपूर्ण वक्तव्य सुनकर उपस्थित पण्डित मण्डली स्तब्ध रह गई। जिन दिनों रंगाचार्य की समृद्धि एवं सम्मान चरम शिखर पर था, तब उनके विद्या गुरू कृष्ण शास्त्री वृन्दावन पधारे। यमुना तट पर आरती के समय कुछ विद्वानों में **'अजाद्युक्ति'** पद के समास पर विवाद हो गया। दण्डी जी